International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 07-05-2020; Accepted: 14-05-2020; Published: 08-06-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 30-32

आठवां दशकः उदय प्रकाश की कहानियों में समय का सच और विडम्बना

प्रीति मणि
बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, मुजफ्रपफरपुर, बिहार, **भारत**

प्रस्तावना

हिन्दी कथा साहित्य का आठवां दशक अपने यथार्थपरक संवेदनात्मक, मनोवैज्ञानिक चरित्रा की उद्भावना तथा कलात्मक शिल्प–संरचना के जिस समृ(दौर से गुजर रहा था, उनमें समकालीन कथाकार उदय प्रकाश का योगदान उल्लेखनीय है। वैविध्यपूर्ण जीवनानुभव से लैस उदय जी की कहानियां तमाम असहमतियों और विवादों को पीछे छोड़ते हुए पाश्चात्य मापदंड पर टिकी हिन्दी आलोचना की कसौटियों के सामने सदैव एक चुनौती खड़ी की है। इनकी कहानियों में भावों की जटिलता और कलात्मकता का श्रृंगार है, पर वो श्रृंगार किसी साध्क के आनन्दमय स्वरूप की ही आभा प्रकट नहीं करता, अपितु उसके जीवन की विभत्सता से उत्पन्न संत्रााास, पीपासा, जिजीविषा, असुरक्षा, एकाकीपन, आन्तरिक–बाह्य संघर्ष के साथ अपने परिवेश से तारतम्य बनाने की जद्दोजहद में स्वयं को तलाशने की नाकाम कोशिश करता नजर आता है।

'जीवन की भांति साहित्य निरंतर बदलता, विकसित होता रहता है। जिसे चेतना नियंत्रिात नहीं करती है। आठवें दशक की कहानियों का ढांचा पश्चिमी कहानियों की अनुकृति और प्रतिकृति नहीं है। कहानी का एक भारतीय सांचा उभर कर सामने आया है, जिसमें तीनों काल एक साथ प्रवाहित रहते हैं। जिसमें न अतीत मरता है और न भविष्य पफूटता है अपितु केवल वर्त्तमान अपनी वर्त्तमानता, निरन्तरता, विकासमयता के साथ मानव को मथता–उद्वेलित करता चलता है। इस काल धरा में कहानी ने पफैलाव में नहीं, जमीन में ध्ंसकर गहराई पैदा की है। – 1

आठवें दशक में प्रवेश के साथ ही हिन्दी कथा साहित्य के प्रांगण में अपने अनुभवों का पुष्प खिलाने वाले कथाकार उदय प्रकाश ने एक विशेष छवि निर्मित की है। 'दरियाई घोड़ा', 'तिरिछ', '... और अन्त में प्रार्थना', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'पीली छतरी वाली लड़की', 'दत्तात्रोय का दुःख' आदि संग्रहों में संगृहीत कहानियों में जो नवचेतना और सामयिक परिवेश से उत्पन्न उत्कन्ठा है, उसने उदय प्रकाश को चर्चित कथाकार बना दिया है। उदय प्रकाश के शब्दों में, 'अगर 1980 को एक विभाजन रेखा मान लें तो हम देखते हैं कि हमारे समय में, समाज में, साहित्य में बहुत परिवर्त्तन हुआ है। निजीकरण और खगोलीकरण जैसी चीजें आईं, विदेशी कम्पनियों का आगमन हुआ ... कॉर्पोरेट सेक्टर का, शेयर मार्केट का बहुत विस्तार हुआ और इस सबसे हमारे समाज की वर्गीय संरचना बदली। नये वर्गों और उपवर्गों का विकास हुआ। मध्यवर्ग का बहुत विस्तार हुआ। ... इस प्रकार 1980 के बाद से जो परिवर्त्तन हुए, उनसे हममें से बहुत सारे लोग जो लेखक, अध्यापक, वैज्ञानिक आदि थे – जो 'अवांगार्द' या समाज के हिरावल दस्ते के प्रतिनिध्ि माने जाते थे – प्रभावित हुए और उपभोक्तावाद के शिकार नहीं, बल्कि उसके अविच्छिन्न अंग बन गये। ... हम देखते हैं कि साहित्यिक ही नहीं, आर्थिक, राजनीतिक आदि जितने भी विमर्श हैं, उसमें भी यही मध्यवर्ग रह गया है। मजूदर, किसान या गरीब लोग सारे विमर्श से बाहर हो चुके हैं। ऐसी बदली हुई स्थिति में कहानी और कहानीकार भी बदल रहे हैं। ... आज हमारी कहानियों का पाठक या श्रोता यह मध्यवर्ग है और यह इतना शक्तिशाली है कि हमारा साहित्य इसको प्रभावित नहीं करता, बल्कि यही हमारे साहित्य को प्रभावित करता है। –2

'मानवीय स्पर्श और संवेदना

'आठवें दशक की कहानी 'दरियाई घोड़ा' उदय प्रकाश के कहानीकार की उपलब्धि के बतौर गिना जा सकता है, जिसमें रचा–बसा गहरा मानवीय स्पर्श, संवेदना और ताप आज के युवा कहानी के सामर्थ्य और ताजगी का बैरोमीटर माने जा सकते हैं।'–3 '' मोमबत्ती की पीली रोशनी में दादा का चेहरा डरावना और अपरिचित लग रहा था। इस आदमी को मैंने कभी नहीं देखा। क्या यह सचमुच आदमी ही है? कौन हो तुम? मैं चीखना चाहता था।..... यह दादा नहीं थे। दरियाई घोड़ा, हनुमान, राक्षस, पिशाच, मगरमच्छ सब एक साथ सामने के पलंग पर, एक शरीर बनकर लेटे हुए थे। लगता है, हमारे बचपन के दिनों में, जहां वे दरियाई घोड़ा बनते–बनते मौका चूक जाते थे और हमारी जीत हो जाती थी, आज वैसा नहीं होने दिया दादा ने। लेकिन यह उनकी भी हार थी। –4

वर्त्तमान समय में मनुष्य के संकट और उससे उपजे यथार्थ का जितनी गहराई से अन्वेषण और लेखन होगा उतनी ही लोकप्रिय उसकी रचना होगी।

'स्वप्न और यथार्थ से उत्पन्न पफैंटेसी :

'तिरिछ' उदय प्रकाश की सर्वाध्कि चर्चित कहानी है जिसमें उत्तर आधुनिक त्रासदी है। आज के युग में समय बहुत दूर तक वैश्विक और सार्वभौम हो चुका है, जिसमें यथार्थ और समय के बीच एक अलंघ्य खाई उभर आई है और उससे उत्पन्न हुई है जीवन में बेमानगी और अजनबीयत। इस कहानी में एक पुत्रा द्वारा अपने पिता की मर्मांतक घटना का जिक्र है जो अप्रत्याशित, दारूण और भयावह है, जो उसके स्वप्न में तिरिछ बनकर आता है। बदले हुये समय, परिवेश और भीषण यथार्थ का रूप ले लेता है, जिसके शिकार पिताजी हो जाते हैं, ' पिताजी की मृत्यु सवा छह बजे के आस–पास हुई थी। तारीख थी 17 मई 1972 । चौबीस घंटे पहले लगभग इसी वक्त उन्हें तिरिछ ने काटा था। चौबीस घंटे पहले क्या पिताजी इन घटनाओं और इस मृत्यु का अनुमान कर सकते थे? – 5

तिरिछ एक विषैला जानवर है जो इस कहानी में प्रतीक बन जाता है। 'कल्पना की सूक्ष्मता का विस्तार बगैर तारतम्य को छोड़े यदि कोई कथाकार किसी कहानी में कर देता है तो वह पाठक को उसकी संवेदनाओं के उद्गम स्थल पर पहुंचा देता है – तिरिछ में यही हुआ है – उदय प्रकाश। आठवें दशक की कहानियों में मानवीय स्पर्श तिरोहित होता दिखाई देता है, जहां मृत्यु या अपघात जैसी घटना भी न किसी को झकझोरती है, न उत्तेजित ही करती है।

'पिछड़ी जातियों का तिरस्कार

'... और अंत में प्रार्थना' में कहानीकार उदय प्रकाश ने समकालीन दलित जीवन के यथार्थ का चित्राण किया है। जिसमें ऊंच–नीच का भेद, छोटी, निम्न और पिछड़ी जातियों का तिरस्कार, उनसे दुर्व्यवहार शामिल है।

डॉ0 दिनेश मनोहर वाकणकर संस्कारों से हिन्दू थे और उनमें भक्ति और अध्यात्मिकता की गहराई भी थी। अपने चिकित्सीय पेशे को पूरी निष्ठा से निभाने का प्रयास भी करते रहे, पर अपने ही सहकर्मियों का अपने पेशे से खिलवाड़ उन्हें असह्य होने लगा– 'डॉ0 वाकणकर चिकित्सा के पेशे में आए ही इसलिये थे कि वे मरते हुए मनुष्य को पिफर से जीवन दें। लेकिन ऐसे सि(ान्त, जो किन्हीं भौगोलिक नृतत्व और जेनेटिक कारणों से कम विकसित या हीन रह गई मनुष्य जाति को मिटा डालने पर आमादा हो, उन्हें कुछ–कुछ आसुरी या राक्षसी सि(ान्त लगते। क्या पृथ्वी में सिपर्फ जर्मन और ग्रीक ही रहेंगे? क्या भारत में सिपर्फ कश्मीरियों और पंजाबियों को ही रहना चाहिये? अगर संसार में सिपर्फ श्रेष्ठ नस्लें ही राज करेंगी तो पतली रोंएदार टांगों, पफूले–पिचके पेट और औसतन पांच साढ़े पांच पफुट की ऊंचाई वाले अननुपातिक ढ़ंग से हडैले तुंदियल, काले कत्थई हिन्दुस्तानी कहां जायेंगे। – 6

सुभाषचंद्र मौर्य से बातीचीत के दौरान उदय प्रकाश ने कहा '..... .....और अन्त में प्रार्थना' का गुस्सा करूणा है, 'तिरिछ' में यह हताशा के कारण उपजी है, जबकि 'पीली छतरी वाली लड़की' का गुस्सा निजी नहीं सामाजिक है। इस कहानी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए मुझे 'सांड', 'पागल कुत्ता' तक कहा गया। दरअसल मुझे 'पीली छतरी वाली लड़की' का राहुल समझ लिया गया। यह बचकाना समझ है। अगर ऐसा है तो और अन्त में प्रार्थना' का वाकणकर मैं क्यों नहीं हूं या 'तिरिछ' का बच्चा मैं क्यों नहीं हूं? दरअसल यह सब अपनी सुविध के अनुसार तय कर लिया जाता है। किसी लेखक को उसकी रचना के पात्रा के रूप में 'आइडेन्टीपफाई' करना गलत है। – 7

जातीय, सांस्कृतिक, राजनीतिक संघर्ष के बीच 'पीली छतरी वाली लड़की'

'पीली छतरी वाली लड़की' में उदय जी ने 'एंथ्रोपोलॉजिकल' तथ्यों द्वारा संकेत करके जातिवाद पर गहरा प्रहार किया है। इस कहानी का कथानायक राहुल है, जो निम्न वर्ग का प्रतिनिध्वि करता है, जो एक सवर्ण लड़की अंजली से प्रेम करता है। राहुल, अंजली के बीच घटित होने वाली घटना वैयक्तिक ही नहीं, जातीय और सांस्कृतिक भी है। इस रूप में प्रेम और प्रतिशोध के बीच दोनों का संबंध परिघटित होता है।

'विडम्बना यह भी है कि आज भी हमारे देश का पहला नागरिक, हमारे संविधन का पहरेदार और हमारी तीनों सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति उसी स्थापत्य के भीतर रहता है।'.....

'यह राहुल कह रहा था, जिसकी उम्र मुश्किल से अभी तेईस साल की थी और जो एंथ्रोपोलॉजी छोड़कर अंजली जोशी के प्यार के चक्कर में हिन्दी साहित्य में एम0ए0 प्रीवियस का छात्रा बन गया था।'.....'नया जेनरेशन कौन सा है? जिसके एक हाथ में पेप्सी बगल में एक अध्नंगी मॉडल और जेब में क्रेडिट कार्ड और वीजा है या वह, जिसकी आंखें लाल हैं, जिसके मां–बापों को पिछले पचास सालों में शासकों द्वारा लगातार ठगा गया है और जिसके हाथ में पिफलहाल हथियार है और जिसे हर रोज मुठभेड़ों में मारा जा रहा है?'–8

आठवें दशक की कहानियों में लेखक अपनी रचनात्मक सरोकार और सहभागिता में पूरी तरह से हिस्सेदार है, क्योंकि लेखक आज के सामाजिक जीवन के दोनों स्तर पर समान रूप से विचरण कर रहा है। वह वैयक्ति और सामाजिक विन्दुओं को एक–सा झेल रहा है।

उपभोक्तावादी बाजारू साम्राज्यवाद के बीच मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बना

समकालीन राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश उदय प्रकाश की ' पॉल गोमरा का स्कूटर ' शीर्षक कहानी में अपनी तमाम विकृतियों के साथ चित्रित हुआ है। पॉल गोमरा के रूप में रामगोपाल का बदल जाना जहां प्रतीक बना है, वहीं पाल गोमरा की स्कूटर दुर्घटना, जो प्रतीक है उपर्युक्त विकृतियों का, वर्त्तमान राजनीति की तेज गति से होने वाली आम आदमी की मंद गति की टकराहट का, जहां आम आदमी के सपने लगातार टूटते–बिखरते जा रहे हैं। इसका कारण है–भूमंडलीकरण और उपभोक्तावादी बाजारू साम्राज्यवाद, जिसका सशक्त प्रतिरोध स्कूटर के रूप मे प्रकट हुआ है। उत्तर आधुनिक युग में अपना नाम तक आदमी उसी ढंग का रखना चाहता है– 'उनका यह पफैसला अपने नाम को लेकर ही था। उन्होंने विखण्डनवादी पाठ–प(ति अपनाते हुए सिपर्फ यह किया कि अपने नाम रामगोपाल के 'पाल' को तोड़कर अलग निकाला उसे हल्का सा डिस्टॉर्ट करते हुए पॉल बना दिया। इसके बाद बाकी बचे 'रामगो' को उल्टी तरपफ से पढ़ दिया – 'गोमरा'। इस तरह से उनका जो नया नाम निर्मित हुआ, वह था – 'पॉल गोमरा' –9

'सत्य का कोई भौतिक प्रमाण नहीं

'दत्तात्रोय के दुःख' उदय प्रकाश की एक अलग तरह की कहानी है, जिसमें सरकारी कला और संस्कृति विभाग में कभी सेवारत रहे विनायक दत्तात्रोय की दुःखपूर्ण जीवन गाथा की प्रस्तुति हुई है।

उदय जी की इस कहानी में एक तरपफ नौकरशाही रवैये को दिखाया गया है, जहां प्लास्टिक के नगण्य और निर्जीव बटन की यांत्रिक आवाज के सामने एक साधरण मनुष्य गुलाम बन जाता है।

'यह तकनीक द्वारा प्रकृति और मुनष्य को गुलाम बनाने का एक अत्यन्त मार्मिक और दहला डालने वाला उदाहरण था' –10

वहीं दूसरी ओर सरकारी कला और संस्कृति विभाग में सेवारत रहे विनायक दत्तात्रोय के दुःखपूर्ण जीवन की प्रस्तुति हुई है जहां अपने विभाग के आलाअपफसरों के द्वारा लगाये आरोपों को गलत साबित नहीं कर पाते। 'उन्होंने अपनी डायरी के एक पन्ने पर लिखा है :

सच यह है कि मैं यह नहीं जानता कि अन्तर्यामी कौन है और सत्य यह भी है कि उस नाम से मैंने कभी कोई लेख नहीं लिखा। लेकिन इस सच को प्रमाणित करने के लिये मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है, जबकि यह झूठ है कि मैं ही अंतर्यामी खैरनार हूं, लेकिन इस झूठ का भौतिक प्रमाण मौजूद है और वह सरकार के संस्कृति विभाग के उस भ्रष्ट अध्किारी की मेज की दराज में पिफलहाल बन्द है। –11

आठवें दशक से बढ़ते हुए अबतक उदय प्रकाश ने अपनी कहानी–कला में प्रतीकात्मकता, शिल्प के नए प्रयोग, नयी कथा–जुगतों का अविष्कार और जटिल संरचना को भी सरल और बहुआयामी अर्थ प्रदान किया है। इसी दौर की उनकी अन्य कहानियों में 'टेपचू', 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड़', 'मैंगोसिल,' 'मोहनदास', 'अरेबा–परेबा', 'नेलकटर', 'डिबिया' आदि अत्यन्त उल्लेखनीय हैं और मध्यवर्गीया विडम्बनाओं को उजागर करती हैं। इन कहानियों में उदय प्रकाश का जीवनानुभव सर्वाध्कि निकटता से अभिव्यक्त हुआ है। उदय जी के शब्दों में, 'रचनाकार की भाषा में विदग्ध्ता के साथ उसकी प्रज्ञा, दृष्टि, विचार और विवके की सक्रियता ही उसे बड़ा बनाती है। किसी सत्तामूलक, राजनीतिक अथवा निजीस्वार्थ से परे अपने समय के उत्पीड़ित मनुष्य के प्रति उसकी संब(ता ही उसे अपने समय का प्रासंगिक लेखक बनाती है। –12

आठवें दशक की कहानियों में उदय प्रकाश ने एक सच्चे

कलाकार के रूप में निर्भीकता के साथ अपने समय के सच को कहानियों में दर्शाया है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ0 नागेन्द्र, पृ0सं0. 737.
2. अपनी उनकी बात, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0. 62–63
3. दरियाई घोड़ा, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, कवर पृ0.
4. दरियाई घोड़ा, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0. 27
5. तिरिछ, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0. 45
6. ... और अन्त में प्रार्थना, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0. 119–120
7. अपनी उनकी बात, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0. 145
8. पीली छतरी वाली लड़की, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0. 66
9. पॉल गोमरा का स्कूटर, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0. 45
10. दत्तात्रोय के दुःख, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0.सं0. 13
11. दत्तात्रोय के दुःख, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0.सं0. 19
12. अपनी उनकी बात, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, पृ0सं0. 97